भारत में बागवानी क्षेत्र की उत्पादकता की प्रवृति, चुनौतियाँ एवं सुझाव

दीपक कुमार राणा

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), टी.पी. कॉलेज,मधेपुरा

सारांश – वर्तमान अध्ययन भारत में बागवानी क्षेत्र की उत्पादन एवं उत्पादकता की स्थिति 2004-05 से 2021-22 तक का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है | यह विश्लेषण द्वितीयक स्रोत पर आधारित है| जिसमें कृषि सहकारिता एवं कृषि कल्याण विभाग के वार्षिक रिपोर्ट 2019-20 एवं राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के रिपोर्ट तथा भारत सरकार द्वारा जारी आर्थिक सर्वेक्षण मुख्य हैं |बागवानी भारतीय कृषि का एक महत्वपूर्ण भाग है|बागवानी में फल,फूल, सब्जी मसाले आदि की खेती की जाती है|बागवानी क्षेत्र का न सिर्फ दायरा बढ़ रहा है बल्कि उत्पादन एवं उत्पादकता भी बढ़ रही है |

मुख्य शब्द – उत्पादकता , चुनौतियाँ, प्रतिशत , प्रवृति , बागवानी

परिचय - कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की मेरुदंड है |यह आजीविका का मुख्य साधन है |कृषि न केवल रोजगार प्रदान करती है बल्कि यह उद्योगों के लिए कच्चे माल भी प्रदान करती है |वर्तमान समय में राष्ट्रीय आय में सेवा क्षेत्र के महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद कृषि सतत विकास के लिए आवश्यक हैं| आजादी के बाद बीस वर्ष बाद देश में हरित क्रांति की शुरुआत हुई | इस क्रांति के कारण हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर होने की दिशा में अग्रसर हुआ | उसके बाद ही बागवानी क्षेत्र के प्रति सरकार और किसानों का ध्यान गया और यह कृषि का मुख्य भाग बन गया |

वर्तमान में बागवानी भारतीय कृषि का एक प्रमुख अंग है |कुल कृषि उत्पादन में बागवानी का हिस्सा एक तिहाई है |कृषि के विविधीकरण मे बागवानी फसलों की महती भूमिका है| आज बागवानी फसलें पोषण ,आजीविका उत्पादन, आमदनी ,रोजगार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका रही है| तेजी से बढती आर्थिक विकास के कारण खपत एवं मांग बढ़ी है जिसके कारण इन फसलों का उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है|भारत के साथ साथ विश्व के अन्य देशों के लोगों की बढती आय एवं उपभोग रूचि में परिवर्तन बागवानी उत्पादों खास कर फल एवं सब्जियों की मांग तेजी से बढ़ रही है| सरकार ने इसकी महता को पहचानते हुए वर्ष 2012 को बागवानी वर्ष घोषित किया |बागवानी फसलों के उत्पादन की ओर किसानों के बढ़ते रुझान के चलते विगत कुछ वर्षो से देश में इनका कुल उत्पादन अब खाद्यान्न के उत्पादन से अधिक है | वर्ष 2012-13 में पहली बार देश में बागवानी फसलों का कुल उत्पादन खाद्यान्न उत्पादन की तुलना में अधिक रहा तथा यह सिलसिला बाद में 2013-14 से निरंतर जारी है | भारत में कुल बागवानी उत्पादन में लगभग 9% भाग फलों व सब्जियों के उत्पादन का है जिसके चलते हैं फलों और सब्जियों के उत्पादन में भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बना हुआ है |बड़े पैमाने के उत्पादन के कारण आज बागवानी एक तेजी से उभरता हुआ कृषि व्यवसाय है|

बागवानी एक बहुत व्यापक क्षेत्र है जिसमें फसलों का विविधता है। बागवानी को हम उसमें उगाये जानेवाली फसलों के अनुसार इसको निम्नलिखित प्रकार से विभाजित कर सकते है

(A)फल : आम, केला ,संतरा,सेब,लीची, अंगूर,बादाम, अनार आदि प्रमुख फलों का उत्पादन किया जाता है.

(B)सब्जी : आलू ,प्याज,बैगन ,गोभी,मिर्च,भिन्डी,टमाटर,कद्दू,मटर आदि प्रमुख सब्जियां हैं|

(C) फूल : विभिन्न प्रकार के सुगन्धित फूल,जड़ी- बूटी, के उत्पादन, शामिल हैं।

(D) बगानी उपज (मसाला)- इसमें लहसुन,अदरक,हल्दी, धनिया,कलि मिर्च,जीरा आदि प्रमुख मसालों का उत्पादन किया जाता है|

(E)परिदृश्य बागवानी : इसके अन्तर्गत सजावटी पौधों के रोपण शामिल है।

साधरण शब्दों में ,बागवानी फलों ,सब्जियों ,फूलों ,मसालों जड़ी –बूटी एवं सजावटी पौधों के खेती,उत्पादन और बिक्री से सम्बंधित होता है |

साहित्य समीक्षा

1) चौधरी(2013) ने राष्ट्रीय बागवानी मिशन का कृषि विकास में योगदान का अध्ययन किया |इस अपने अध्ययन में पाया की राष्ट्रीय बागवानी मिशन का कृषि विकास में योगदान बढ़ रहा है |

2)देवी ,राजकुमारी आशा (2020)ने अपने अध्ययन भारत में सब्जी उत्पादन के प्रवृति और विस्तार में पाया की भारत में सब्जी का उत्पादन एवं क्षेत्र बढ़ रहा है और भारत विश्व दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक राज्य बन गया है |

अध्ययन का महत्व

साहित्य समीक्षा में पाया कि बागवानी का क्षेत्र , उत्पादन एवं उत्पादकता के साथ चुनौतियाँ का अध्ययन नहीं किया गया है | इस अध्ययन में इन सभी पहलुओं को शामिल किया गया है |भारत में बागवानी पर जोर राष्ट्रीय बागवानी मिशन के बाद ही दिया गया है |इसमें राष्ट्रीय बागवानी मिशन के पहले 2004-05 एवं 2021 -22 तक के आंकड़े के आधार पर विश्लेषण किया किया गया है | कोविड -19 के दौरान बागवानी क्षेत्र का निष्पदान क्या रहा इसकी भी जानकारी प्राप्त होगी।

उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं

1) बागवानी फसलों के क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता का विश्लेषण करना

2) इस क्षेत्र के चुनौतियाँ का अध्ययन करना एवं सुझाव देना |

परिकल्पना

भारत में बागवानी का क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ रही है |

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीय आंकड़ों पर आधारित है| यह आंकड़े विभिन्न स्रोतों से एकत्रित किए गए हैं जिसमें कृषि सहकारिता एवं कृषि कल्याण विभाग के वार्षिक रिपोर्ट 2019-20 एवं राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के रिपोर्ट तथा भारत सरकार द्वारा जारी आर्थिक सर्वेक्षण मुख्य हैं|

परिणाम एवं विवेचना

बागवानी फसलों का क्षेत्र - बागवानी फसलों का क्षेत्रफल सतत बढ़ा है जिससे उत्पादन स्तर में बढ़ोतरी हुई है जो निम्न तालिका से स्पष्ट है

क्षेत्र : मिलियन हेक्टेयर

उत्पादन – मिलियन टन

उत्पादकता- टन/ हेक्टेयर

तालिका -1

वर्ष	क्षेत्र	उत्पादन	उत्पादकता	वार्षिक प्रतिशत परिवर्तन
2004-05	18.44	166.93	9.05	---------
2005-06	19.32	168.59	8.72	-3.64
2006-07	19.39	191.83	9.92	13.76
2007-08	20.20	211.23	10.45	5.34
2008-09	20.66	214.71	10.39	-0.57
2000-10	20.88	223.08	10.69	2.88
2010-11	21.83	240.24	11.02	3.08
2011-12	23.24	257.27	11.07	5.53
2012-13	23.69	268.84	11.35	2.52
2013-14	24.20	277.35	11.46	0.96
2014-15	23.41	280.99	12.00	4.79
2015-16	24.47	286.19	11.69	-2.58
2016-17	24.85	300.64	12.10	3.50
2017-18	25.43	311.71	12.26	1.30
2018-19	25.74	313.85	12.31	0.40
2019-20	26.46	320.77	12.13	-1.8
2020-21	27.48	334.42	12.15	0.16
2021-22	28.08	342.33	12.19	0.32
औसत	23.20	261.72	11.16	
प्रतिशत परिवर्तन	52.27	105.07	34.69	
मानक विचलन	2.91	55.59	1.10	

स्रोत- 1)कृषि सहकारिता एवं कृषि कल्याण विभाग के वार्षिक रिपोर्ट 2019-20

2) कृषि सहकारिता एवं कृषि कल्याण विभाग के वार्षिक रिपोर्ट (तीसरा अनुमान 27 अक्तूबर 2022)

तालिका से स्पष्ट पता चल रहा है कि वर्ष 2004-05 में बागवानी की खेती 18.44 मिलियन हेक्टेयर में होती थी जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 28.08 मिलियन हेक्टेयर हो गयी|जो पहले की तुलना में 52.27 प्रतिशत अधिक है|

बागवानी उत्पादन में भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई है|2004-05 में बागवानी का कुल उत्पादन 166. 93 मिलियन टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 342.33 मिलियन लाख टन हो गया | जो पहले की तुलना में 105.07 प्रतिशत अधिक है|

तालिका से स्पष्ट है की उत्पादकता घट बढ़ती रही है | यह परिवर्तन मामूली है|

वर्ष 2004-05 में बागवानी की खेती की उत्पादकता 9.05 टन प्रति हेक्टेयर थी जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 28.08 टन प्रति हेक्टेयर हो गयी|जो पहले की तुलना में 34.69 प्रतिशत अधिक है|

ग्राफ-1 बागवानी की क्षेत्र एवं उत्पादकता की प्रवृति

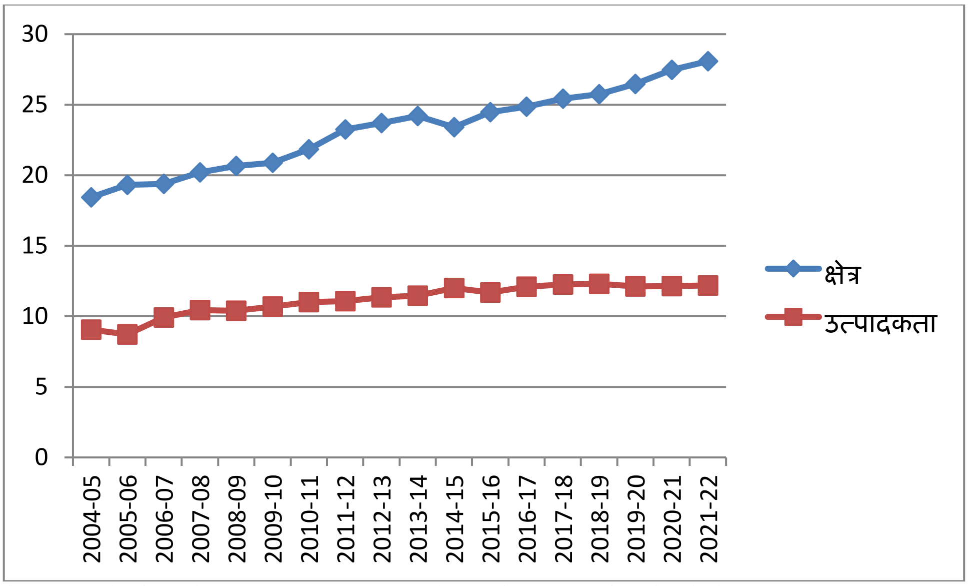

ग्राफ -1 बतलाता है कि बागवानी की खेती का क्षेत्र लगातार बढ़ रही है लेकिन बढ़ने की गति धीमी है | वर्ष 2014-15 में थोड़ीकमी हुई| उसके बाद लगातार धीमी गति से बढ़ रही है |

ग्राफ -2 बागवानी उत्पादन की प्रवृति(मिलियन टन)

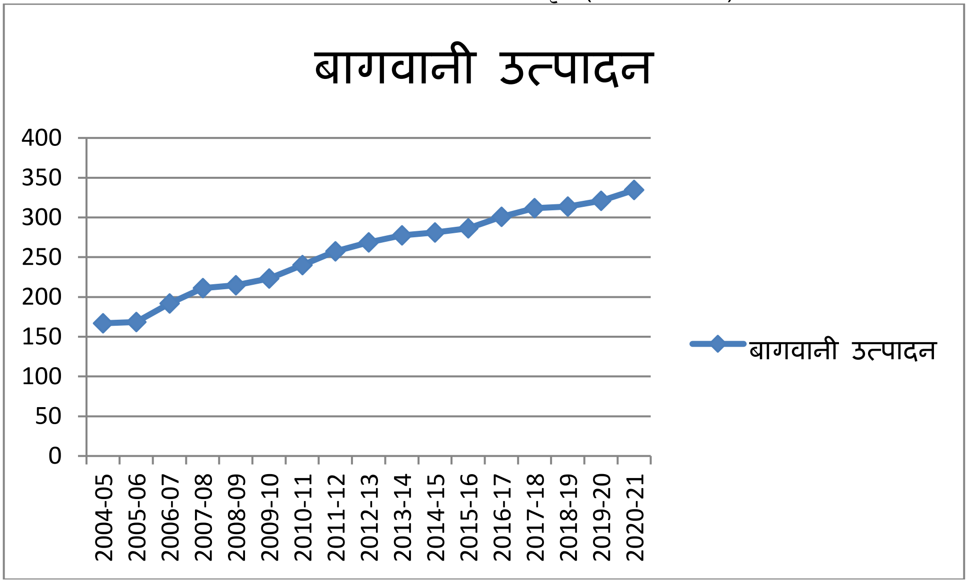

ग्राफ -2 बतलाता है कि बागवानी उत्पादन प्रवृत्ति धनात्मक रूप से लगातार बढ़ रही है |

प्रवृत्ति रेखा (उत्पादन)

Y=261.67+7.12X

तालिका -2

बागवानी का खाद्यान्न उत्पादन से तुलना

वर्ष	बागवानी उत्पादन	खाद्यान्न का उत्पादन
2004-05	166.93	198.36
2005-06	168.59	208.60
2006-07	191.83	217.28
2007-08	211.23	230.78
2008-09	214.71	234.47
2009-10	223.08	218.11
2010-11	240.24	244.50
2011-12	257.27	259.29
2012-13	268.84	257.13
2013-14	277.35	266.57
2014-15	280.99	265.57
2015-16	286.19	252.02
2016-17	300.64	251.57

2017-18	311.71	285.01
2018-19	313.85	285.21
2019-20	320.77	297.5
2020-21	334.42	310.74
2021-22*	342.33	315.7*
औसत	261.72	255.46
प्रतिशत परिवर्तन	105.07	62.96
S.D.	55.59	31.73

(*अनुमानित)

ग्राफ -3 बागवानी उत्पादन की प्रवृति(मिलियन टन)

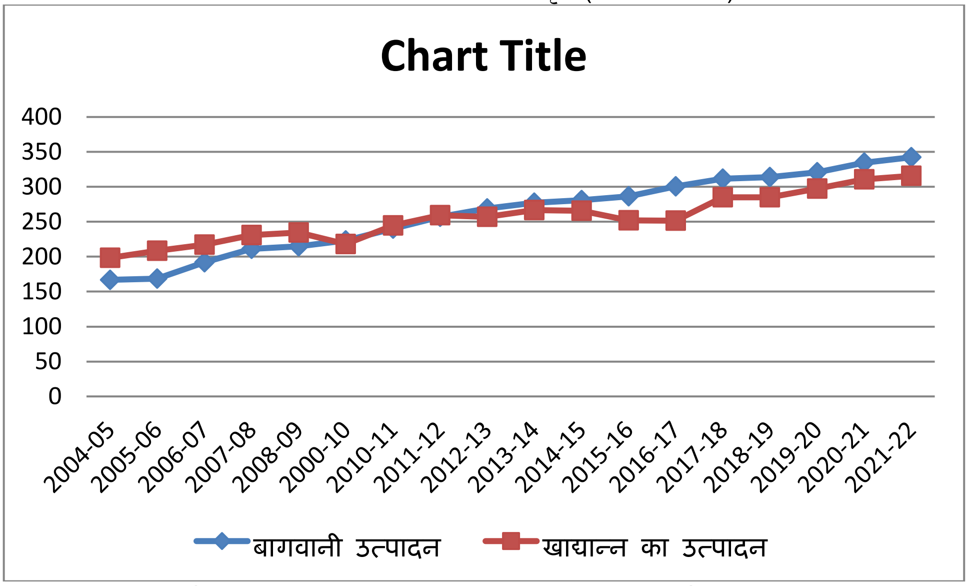

तालिका 2 और ग्राफ 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2004 से 2008 तक खाद्यान्न उत्पादन अधिक रहा परन्तु 2009 में कम हो गया | उसके बाद बागवानी उपज वर्ष 2012 तक कम रही |लेकिन वर्ष 2013 -14 से लगातार बढ़त बनाए हुए है |

बागवानी क्षेत्र की चुनौतियाँ-

भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा फल और सब्जियों का उत्पादक है | परन्तु बागवानी क्षेत्र में अनेक चुनातियाँ है जो निम्नलिखित हैं -

- खाद्यान्न फसलों की तरह सरकार किसी प्रकार का प्रत्यक्ष सहायता नहीं देती है | जिस प्रकार न्यूनतम समर्थन मूल्य देकर सरकार खाद्य फसलों की खरीद करती है वैसी कोई व्यवस्था बागवानी फसलों के लिए नहीं है | अधिक उत्पादन होने पर कृषक द्वारा सब्जियों खेत पर छोड़ देते है या सड़क में फ़ेंक देतें है|

ऊँच्च परिवहन लागत –

बागवानी उत्पादों को खेत से मंडी तक ले जाने में परिवहन के समुचित साधन नहीं रहने के कारण लागत बढ़ जाती है| ऊँची परिवहन लागत के कारण किसानों को समुचित लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है|

अपर्याप्त भण्डारण क्षमता-

कुछ बागवानी उत्पाद ऐसे हैं जिनका भण्डारण लम्बी अवधि के लिए किया जा सकता है |जिसका फायदा उपभोक्ताओं को आपदा के समय मिल सकता है |लेकिन भारत सरकार या किसी राज्य सरकारों द्वारा भी भणडारण के विशेष व्यवस्था नहीं की जा सकी है |

शीत आपूर्ति श्रृंखला-

बागवानी उत्पादों में खास कर सब्जियां , फल ,फूल जल्द ही ख़राब होने लगती है | भारत के हर कोने में प्रयार्प्त मात्रा में शीत भण्डारण की व्यवस्था नहीं है| इसके आभाव के कारण किसानों ,व्यापारियों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है| छोटी – छोटी पूर्ति श्रृंखला के कारण समस्या और गंभीर हो जाती है |

गुणवत्ता का निम्न स्तर-

बागवानी फसलों उपज की गुणवत्ता निम्न स्तर की है| बीजों की गुणवत्ता घटिया होने के कारण एक तो उपज कम होती है उसके साथ ही साथ बाजार में मांग कम हो जाती है | मानकीकरण के आभाव विदेशों में मांग कम हो जाती है |

निर्यात में कम हिस्सेदारी –

निर्यात में बागवानी क्षेत्र का हिस्सा बहुत कम है | ऊँच्च लागत के कारण बागवानी उत्पाद महंगी हो जाती है |खास कर फलों में हम देखते है की इनके कीमतें हमेशा ऊँची बनी रहती है|

सुझाव-

- सब्जियों में चरणबद्ध तरीके से न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान किया जाय |क्योंकि इसके उत्पादन और मूल्यों में परिवर्तन का प्रभाव जन सामान्य पर व्यापक रूप में पड़ता है |
- भण्डारण क्षमता एवं शीत आपूर्ति श्रृंखला को बढाया जाय |
- बागवानी क्षेत्र तकनीक को प्रोत्साहित करने का प्रयास हो|
- लागत कम करने के लिए सरकार सब्सिडी दे ताकि गुणवत्तापूर्ण बीजों ,मशीनों तथा अन्य आवश्यक उपकरणों को खरीदा जा सके |
- बागवानी क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम को विशेष प्रोत्साहन दिया जाय |
- प्रत्येक राज्य में बागवानी उपज के आधार पर खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा दिया जाय।

निष्कर्ष-

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है की भारत में न केवल बागवानी के क्षेत्रफल में बल्कि उत्पादन एवं उत्पदाकता में भी बढ़ोतरी हुआ है | 2013-14 से लगातार बागवानी का कुल उत्पादन खाद्यान्न से अधिक है |बागवानी क्षेत्र में भी अनेक चुनौतियाँ हैं जिनका समाधान कर भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है |

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. कृषि सहकारिता एवं कृषि कल्याण विभाग के वार्षिक रिपोर्ट 2019-20
2. राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के रिपोर्ट
3. भारत सरकार द्वारा जारी आर्थिक सर्वेक्षण
4. Choudhary , Sunil kumar (2007)`contribution of national horticulture mission in agriculture develpment'.
5. Devi,Rajkumari Asha (2020)` Trend and extent of vegetable production in India '.